९. वरदान माँगूँगा नहीं

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

मौलिक सृजन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक दीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

वृक्ष → अंतरिक्ष → पुस्तक → कैमरा

यह हार एक विराम है
जीवन महा–संग्राम है
तिल–तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खंडहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की संपत्ति चाहूँगा नहीं
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम ही महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किंतु भागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

—०—

परिचय

जन्म : ५ अगस्त १९१५ उन्नाव (उ.प्र)
मृत्यु : २६ नवंबर २००२
परिचय : जनकवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी, प्रगतिवादी कविता के स्तंभ थे । उनकी कविताओं में जनकल्याण, प्रेम, इन्सानी जुड़ाव, रचनात्मक विद्रोह के स्वर मुख्य रूप से मुखरित हुए हैं । **प्रमुख कृतियाँ** : हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मेल, मिट्टी की बारात, विश्वास बढ़ता ही गया, वाणी की व्यथा आदि (काव्य संग्रह) । महादेवी की काव्य साधना, गीतिकाव्य उद्‌भव और विकास (गद्‌य रचनाएँ)

पद्‌य संबंधी

गीत : स्वर, पद, ताल से युक्त गान ही, गीत होता है । इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं । प्रत्येक अंतर के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है । गीत गेय होता है ।

प्रस्तुत गीत में कवि ने स्वाभिमान से जीने सुख–दुख में समभाव रखने एवं कर्तव्य पथ पर डटे रहने के लिए प्रेरित किया है ।

शब्द संसार

महा–संग्राम (पु.सं.) = बड़ा युद्‌ध
खंडहर (पु.सं.) = भग्नावशेष
ताप (पु.सं.) = गर्मी
अभिशाप (पु.सं.) = श्राप

मुहावरा

तिल–तिल मिटना =धीरे–धीरे समाप्त होना

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/As2UQ3XCc5I

संभाषणीय

'गणतंत्र-दिवस' के अवसर पर जनतांत्रिक शासन प्रणाली पर अपना मंतव्य प्रकट कीजिए ।

आसपास

'जीत के लिए संघर्ष जरुरी है' विषय पर प्रतियोगिता में सहभागी टीम के साथ चर्चा कीजिए ।

श्रवणीय

किसी अवकाश प्राप्त सैनिक से उनके अनुभव सुनिए और उनसे प्रेरणा लीजिए ।

लेखनीय

'जीवन में परिश्रम का महत्त्व पर' अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे

कविवर्य रवींद्रनाथ टैगोर की कविता पढ़िए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) कवि इन परिस्थितियों में वरदान नहीं माँगना चाहते -

१.

२.

३.

४.

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१. सुखद स्मृति इनके लिए है

२. कवि भयभीत नहीं है

(२) पद्य में पुनरावर्तन हुई पंक्ति लिखिए ।

(३) रेखांकित वाक्यांश के स्थान पर उचित मुहावरा लिखिए :-

रुग्ण शय्या पर पड़ी माता जी को देखकर मोहन का धीरज धीर-धीरे समाप्त हो रहा था । (तिल-तिल मिटना, जिस्म टूटना)

भाषा बिंदु

निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए :-

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१. लता कितनी मधुर गाती है ।	१. .....
२. तितली के पास सुंदर पंख होते हैं ।	२. .....
३. यह भोजन दस आदमी के लिए है ।	३. .....
४. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य है ।	४. .....
५. उसने प्राण की बाजी लगा दी ।	५. .....
६. तुमने मीट्टी से का प्यार ।	६. .....
७. यह है न पसीने का धारा ।	७. .....
८. आओ सिंहासन में बैठो ।	८. .....
९. हम हँसो कि फूले-फले देश ।	९. .....
१०. यह गंगा का है नवल धार ।	१०. .....

रचना बोध

.....

.....

.....